RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 24 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 18 नवम्बर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

जोहार महोत्सव की कला समीक्षा

तरंगित करने के उत्सव जरूरी हैं

घाटी से शहर में बस चुके बुजुर्गों की तमन्ना है कि नई पीढ़ी विरासत की संभाल करे

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी महानगर के हर कौने में आयोजनों की बाढ़ आने लगी है। भाबर के इस पड़ाव को पहाड़ का आँगन कहा जाता है लेकिन मैदान से भारी संख्या में जिस तरह यहाँ जनवृद्धि हुई है, उन हालातों में पहाड़ की तस्वीर को साफ साफ बता पाना भी चुनौती हो चुका है। इसके लिये सबसे पहले यहाँ उत्तरायणी का वृहद आयोजन हुआ था। (पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच की पूरी कहानी स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती की कृति 'हल्द्वानी स्मृतियों के झरोखे से)। एक प्रकार से भाबर के इस हिस्से को शक्ति प्रदर्शन का गढ़ बना दिया गया और अभी हालहाल में ऐसे-ऐसे आयोजन भव्य रूप में दिखाई दे रहे हैं जिनकी कल्पना नहीं थी। तीज, महेंदी, छट, गणपति, झूलालाल सहित दर्जनों आयोजन जो लोक की दहलीज पर तो होते ही हैं इन्हें बाजार का मुंह दिखाना जरूरी समझ लिया गया। लोक के उत्सवों की शक्ति उनके लोक व्यवहार और उनके लोक धर्म में ही होती है लेकिन जब सबकुछ बाजार मानने वाले खुल्लम खुल्ला हों तो इन्हें समझ लेना भी जरूरी है।

उत्तराखण्ड में महोत्सवों की होड़ के पीछे बड़ा कारण कतिपय छुटपुट उद्योग भी है। इससे दरगुजर करने वाले वाले कलाकारों के आदर्श सिर्फ वह हैं जो नृत्य कर मंच से मोहित करते हैं जबकि नृत्य गीत की बड़ी परम्परा हमारे लोक में है और इसका अनुशासन भी। उत्तराखण्डी संस्कृति के नाम पर उछाल मारते नृत्य के लिये कतिपय महिलाएं बेहद चर्चित हो चुकी हैं। सोशल मीडिया है कि वह सब औने-पौने हाल दिखाने की कोशिश में है और 'रस भरे उर नैन-वैन' के मारे युवा उलझन में हैं। इन सारी चुनौतियों से निपटने और अपनी संस्कृति को पोषित करने की सुघड़ कोशिश करने वाले धन्य कहे जाएंगे। भीड़ में गुमनाम होने से बचने और अपनी संस्कृति को संरक्षित करने की दिशा में जोहार वेलफेयर सोसाइटी भी भला कार्य कर रही है। सोसाइटी ने इस बार भी तीन दिन तक 'जोहार महोत्सव' का आयोजन कर रंगारंग छटा बिखेरी। पारम्परिक परिधानों में सजकर महिलओं ने सर्वाधिक भागीदारी की। ढोल-दमुवा लिये अति उत्साही युवा इस शोभायात्रा की अगुवाई कर रहे थे और भावुक करने वाला वह क्षण भी था जब अपनी आंखों से सबकुछ देख अतीत की यादों में सिमटे बुजुर्ग खड़े दिखाई दिये। वह देख रहे हैं कि जमाना कितना बदल चुका है और जिम्मेदारी संभाल रहे युवा किस प्रकार से अपनी धरोहर को बचाएंगे। आयोजन में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के अलावा व्यंजन, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन कर प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। जोहार मिलन केन्द्र से शोभा यात्रा के साथ आरम्भ हुए कार्यक्रम के प्रथम दिन सायंकाल मंचीय प्रस्तुतियों में

शेष पृष्ठ 3 पर

अनुकरणीय हैं अर्जुन सिंह गर्ब्याल

दुर्गम क्षेत्रवासियों के संरक्षक के रूप में रहे हैं

डॉ. पंकज उप्रेती

आर्थिक रूप से सम्पन्न और सक्षम परिवारों की नई पीढ़ी के बच्चों को वर्तमान की चकाचौंध और संसाधनों की भरमार में बहुत सी वह बातें आश्चर्य लग सकती है जब साधन कम होने पर पर भी लोगों में अपनापन और सामाजिक ज्यादा थी। लेकिन वह दिन और वह बातें एकदम सत्य हैं। आवागमन के साधन कम होना, संचार व्यवस्था न होना, चिकित्सा व शिक्षा के मुख्य केन्द्र कुछ ही जगह थे। इसके अलावा अपनों से मिलने की ललक लोगों में ज्यादा थी। ऐसे में कोई भी परिवार चाहे आर्थिक रूप से सक्षम हो या न भी हो तो किसी न किसी रूप में सब एक दूसरे की मदद करते थे। होटलों में रुकने का रिवाज कम था और पढ़ने वाले बच्चों व बीमारों को सहारा देने के लिये लोग तैयार रहते थे। दूसरों की मदद करने में दयालु लोगों का उल्लेख हमेशा होता रहेगा और यह समाज के लिये सबक भी है कि आपसी भाईचारा-एकता के लिये वह परिपाटी बनी रहे। इसमें में कुछ लोग बहुत अग्रणीय रहे हैं, इन्हीं में से एक नाम है श्रीमान अर्जुन सिंह गर्ब्याल।

सीमान्त क्षेत्र गर्ब्यांग की बात करें तो स्व. इन्द्र सिंह गर्ब्याल जी बेहद सादगीपूर्ण जीवन यापन करने वाले हिमालय से अडिग व्यक्तित्व थे। इनके पुत्र हुए- बहादुर सिंह, चन्द्र सिंह, मान सिंह, दिर्क सिंह, राय सिंह। इस बड़े परिवार में से हैं अर्जुन सिंह जी। पिता स्व. बहादुर सिंह व माता स्व. कुसुम गर्ब्याल के वहाँ अर्जुन सिंह, अशोक सिंह, अरविन्द सिंह, धर्मेन्द्र सिंह का जन्म हुआ। भाईयों में ज्येष्ठ अर्जुन गर्ब्याल ने अपनी परिवार परम्परा को बनाए रखा और यही संस्कार सभी भाईयों के रहे हैं। ऐवरेस्ट विजेता योगेश गर्ब्याल भी इन्हीं के परिवार से सम्बन्ध रखते हैं।

श्रीमान अर्जुन सिंह गर्ब्याल की की प्राइमरी शिक्षा अपने ग्राम गर्ब्यांग, गुंजी में हुई और हाईस्कूल धारचूला से किया। तिब्बत-चीन व्यापार बन्द होने के बाद जब ज्यादातर लोग नौकरी की तलाश में निकले, तभी सन् 1980 में इनकी नौकरी रिजर्व बैंक में लगी। बैंकिंग सेवा में रहने के बाद भी गर्ब्याल जी ने अपने हिमालय प्यार को बरकार रखा। लखनऊ में रं कल्याण संस्था बनने के साथ जिस प्रकार की गतिविधियां होने लगीं उसमें यह अग्रणीय थे। नारायण सिंह कुटियाल, विशन सिंह बुढ़ाथोकी, सत्यवान सिंह कुटियाल जैसे चिन्तनशील लोगों ने मिलकर लखनऊ में नई शुरुआत की। श्रीमान नृप सिंह नपलच्याल जब मनोरंजन कर आयुक्त के रूप में लखनऊ में तैनात थे संस्था के रजिस्ट्रेश के कार्य को गति मिली। ये सभी लोग अपनी शासकीय सेवा के अलावा समाजहित में सक्रिय रहते थे। बात जब अर्जुन सिंह

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

सब ने दे दी हैं शुभकामनाएं
लेकिन देवभूमि का क्या होगा?

उत्तराखण्ड स्थापना दिवस पर देश के प्रधानमंत्री सहित स्थानीय ग्राम प्रधान तक ने शुभकामनाएं दे दी हैं। ऐसे में लग रहा है कि उत्तराखण्ड वाकेई छलांग लगाते हुए आगे बढ़ रहा है। इस छलांग के पीछे मुख्य कारण इस प्रदेश में लगातार हो रहे रंगारंग आयोजन दिखाई दे रहे हैं लेकिन क्या यह सब सचमुच हो रहा है? 24 साल तक उत्तराखण्ड में जिस प्रकार की धींगामुस्ती हुई है वह सवालों का ढेर बन चुका है जिसका उत्तर नहीं मिल रहा है।

बड़े पदों से आशीर्वाद मिलना शुभ होता है लेकिन क्या देवभूमि को कायाकल्प होने वाला है? जिस देवभूमि से दूसरों को आशीर्वाद मिलता रहा है वह आज आशीर्वाद के लिये कैसे बेचारी हो गई? विश्व के उस दौर में जब दक्षिण में आक्रान्ताओं ने हमले कर उत्तर को बढ़त ली, अपना बचाव करते हुए लोग देवभूमि पहुंचे थे और इन वीरों ने अपने युद्ध कौशल से देश के लुटेरों को रोका था। देवभूमि का इतिहास-भूगोल इतना भर नहीं है कि यह पहाड़ और नदियों का अड्डा है। ये भूमि तप स्थली के रूप में प्रकृति का उपहार है। यहां की पुरातन संस्कृति के अलावा जो सद्मार्ग का रास्ता इस पर्वतीय भूमि में है उसे दूषित करने की चाल बहुरंगी बनकर वर्तमान में दिख रही है। राजनीति करने वालों और प्रपंच रचने वालों ने इस सुन्दर प्रदेश को डसने की तैयारी कर ली है। इसमें वह लोग भी शामिल हैं जो कहने को पर्वतीय हैं लेकिन अपनी निजी सम्पत्ति बढ़ाने के लिये मिलीभगत कर रहे हैं। कैसे मान लिया जाए कि चारों ओर से मिल रहे आशीर्वाद का परिणाम उत्तराखण्ड की अवधारणा का सा है।

अपने रजत जयन्ती वर्ष को मना रहे उत्तराखण्ड को राजनेता अपनी तरह से समझ और समझा रहे हैं। उन्हें तो किसी सूरत यहां की लोकसभा सीटें और विधानसभा चाहिये। देश के बढ़े कारोबारी और आरामतलब वर्ग पहाड़ में अपना कब्जा चाहता है ताकि जब फुर्सत हो वह आराम को इस दिशा में आ जाए। अपने काले कारनामों की दुनिया से अपने बच्चों को सुरक्षित और दूर रखने वालों का ध्यान भी यही जगह है। खनन और चोरी के रास्ते तलाशने वालों का मन भी इस ओर लगा हुआ है। इन सब बातों को समझ रहा पहाड़ का युवा छटपटा रहा है और आन्दोलन ही उसका रास्ता है। तभी तो उत्तराखण्ड में आये दिन 'हल्ला बोल' प्रदर्शन होने लगे हैं। सुख-शान्ति के रास्ते तलाशने वालों को इन हालातों को समझ लेना चाहिये अन्यथा आने वाले समय में देवभूमि अशान्ति के रूप में धधकता राज्य होगा। इसके लिये राजनेताओं को सबक, सीख और सुरक्षा का ध्यान करते हुए पर्वतीय जन की पीड़ा को समझ लेना चाहिये।

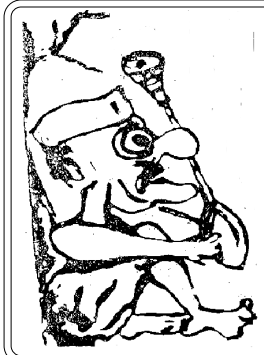

फसक
दाज्यू, मिल-बांटकर खूब लूट रहे ठैरे
टाई-टोप पहन कर अपने कुकर्मों को छुपा रहे हैं बल

दाज्यू, रीठासाहिब में खटीमा के यू-ट्यूबर को पुलिस ने चरस तस्करी में गिरफ्तार कर लिया। बुडम चौकी के पास चैकिंग के दौरान हाथीखाल वार्ड 5 खटीमा निवासी अव अग्रवाल चरस के साथ धरा गया। दाज्यू, ब्लाग बनाना, यूट्यूब खजबज के अलावा कोई बड़ा काम भी तो ऐसे जुवाओं के पास नहीं बचा है बल। इंस्टाग्राम पर फेमस होने के चक्कर में आधा नंगा होकर हल्द्वानी की सड़कों पर बाइक दौड़ा रहा श्याम सिंह को पुलिस ने पकड़ लिया। दाज्यू, ये तो छोटी खुशियों वाली बात ठैरी। बड़े चोर तो मिल-बांटकर खूब लूट रहे ठैरे। लाखों का घपला कर डकार मारने वाले रामू का कहना है- 'जब से पीली पेशाब आनी शुरु हुई है मिठाई खाना बन्द कर दिया है।' दाज्यू, सबको पता है कि रामू जैसे सटरुवा टाई टोप पहन कर अपने कुकर्मों को छुपा रहे हैं। उन्हें भरोसा है कि कागजों में लिपट कर खेल करने से उनका बचाव हो जायेगा।

दाज्यू, उत्तराखण्ड स्थापना की रजत जयन्ती पर हम तो यही चाहते हैं कि पेलनचू कार्यवाही हो जाए। बलात्कारियों, दुष्कर्म करने वालों, नदियों और जंगलों का नाश मारने वालों, पहाड़ को गाली देने वालों का कानूनी चुटान हो। देवभूमि को रौंदने वालों को फल मिलना ही चाहिये। -तुम्हारा भुली झकरुवा

निकाय चुनाव के लिये धुंआधार मिलन होने लगा है
हल्द्वानी में मेयर के लिये दर्जनों ने मचल रहे हैं, लालकुआ में भी

हल्द्वानी/देहरादून। निकाय चुनाव के लिये प्रदेश भर में नेतागण मचलने लगे हैं। उन्हें पता है कि अब निकाय गणित का समय आ चुका है। भाजपा और कांग्रेस पार्टी से जुड़े नेता अपने बड़े नेताओं मिल कर और मीडिया प्रचार से अपने पक्ष में माहौल बनाने की जुगत कर रहे हैं।

चुनाव के लिये सभी जगह राजनीतिक पाठ हो रहे हैं लेकिन हल्द्वानी में विशेष हलचल दिखाई दे रही है क्योंकि प्रदेश की राजनीति में बड़ा खेल हल्द्वानी की नेतागर्दी को देखते होने लगे हैं। पूर्व रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट यहां सांसद हैं और स्व. इन्दिरा के सुपुत्र सुमित हृदयेश यहां के विधायक। लगी हुई कालाढूंगी सीट पर बंशीधर भगत विधायक हैं। सीएम से लेकर हर बड़े नेता का सम्पर्क हल्द्वानी से है और पहाड़ के तमाम विधायकों के आवास महानगर या इसके आसपास हैं।

निकाय चुनाव की हवा में भाजपा की ओर से पूर्व मेयर डॉ.जोगेन्द्र पाल सिंह रौतेला का नाम सबसे ज्यादा चर्चा में है लेकिन तैयारी में लगे अन्य भी कम नहीं पड़ रहे। प्रचार-प्रसार में इनके नाम होर्डिंग व सम्पर्क में दिखाई दे रहे हैं। इनमें सबसे अग्रणीय जिला पंचायत अध्यक्ष प्रमोद तोलिया दिखाई दे रहे हैं। लगातार झटके खा चुकी कांग्रेस में टिकट के लिये 31 नेता दावा ठोक चुके हैं। इसका मतलब कांग्रेसियों को लग रहा है कि अब उनका समय आने वाला है। चुनाव जिला प्रभारी गोविन्द कुन्जवाल को टिकट के लिये आवेदन सौंपने वालों में हेमन्त बगड्वाल, शोभा बिष्ट, सौरभ भट्ट, ललित जोशी, भोलादत्त भट्ट, जया कर्नाटक प्रमुख हैं। लालकुआ पालिका क्षेत्र में भी टिकट के लिये लम्बी कतार लग चुकी है। पार्टी टिकट के लिये ऐसा ही दबाव अन्य सीटों पर भी बना रहा है।

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

हीरा सिंह जंगपांगी

रामपुरम् कालोनी
बाजपुर रोड
काशीपुर
(उधमसिंह नगर)

अनुकरणीय हैं अर्जुन सिंह गर्ब्याल.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

जी करें तो याद आता है एकदम शान्त स्वभाव के साथ यह कर्म करने पर विश्वासी रहे हैं। सन् 1986 में जब मैं और भाई धीरज संगीत शिक्षा के सिलसिले में लखनऊ जाते थे रिजर्व बैंक का पूरा कार्यालय परिवर्तन चौक के पास हुआ करता था। हल्द्वानी से हावड़ा एक्सप्रेस से लखनऊ पहुँचते ही सीधे केशरबाग हाते परिवर्तन चौक के पास प्रेस क्लब में हमारा अड्डा होता। यहीं से पड़ोस में रिजर्व बैंक में 'पिघलता हिमालय' के अपने साथियों से मिलने भी जाते थे तो श्रीमान केदार सिंह मर्तोलिया सहित सभी मिल जाते। अर्जुन सिंह जी हमेशा पूछते- कोई नई पुस्तक प्रकाशित हुई है, सहयोग के लिये उनका भाव सबके साथ रहा है। समाज में ऐसे अनगिनत लोग हैं जिन्होंने उनके संरक्षण में लखनऊ में शिक्षण प्रशिक्षण व सुरक्षा महसूस की।

उत्तराखण्ड बनने के बाद से पहाड़ से लखनऊ जाने वालों का रुख कम हुआ है वरना तो उच्चशिक्षा, मेडिकल शिक्षा व अन्य महत्वपूर्ण कार्य व तलाश के लिये लोग उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ, इलाहाबाद व दिल्ली सर्वाधिक जाते थे। पहाड़ से लखनऊ जाने वालों युवाओं के मुख्य अड्डे अपने क्षेत्र के विधायकों से लेकर रिश्तेदारों तक तक हुआ करते थे। सहारा लेकर आगे बढ़े युवा उन स्थितियों को समझते हैं। लखनऊ में भले ही उ.प्र. की राजधानी हो लेकिन पर्वतीय समाज का दबदबा हमेशा से रहा है। यहाँ पर्वतीय रामलीला, होली, उत्तरायणी से लेकर हर तरह के उत्सव बराबर होते हैं और पहाड़ी संस्कृति में रमे लोगों का मिलन होता रहता है। आपसी प्रेम व्यवहार के इस ताने-बाने का बना रहना ही सामाजिक सौहार्द है जिसे नई पीढ़ी को समझना चाहिये। हमारे बुजुर्गों ने किन परिस्थितियों में दुर्गम स्थान से सुदूर महानगरों में जाकर अपनी सम्मानित जगह बनाई और अपने समाज के लोगों को हमेशा उत्साहित किया। ऐसा ही संकल्प श्रीमान अर्जुन सिंह गर्ब्याल का रहा है जो कहने से ज्यादा करने पर विश्वास करते हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

परिचय

पहाड़ की सेवा के लिये समर्पित डॉ. महेश कुड़ियाल

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड विषम भोगौलिक परिस्थितियों के लिए जाना जाता है यहाँ स्वास्थ्य सेवाएँ हमेशा से चुनौतीपूर्ण रही हैं। लेकिन कुछ हस्तियाँ ऐसी भी हैं जो आज से तीन दशक पहले विदेश में करोड़ों के सैलिरी पैकेज को दरकिनार कर उत्तराखण्ड की सेवा के लिए अपने प्रदेश वापस लौटे।

टिहरी गढ़वाल के प्रतापनगर स्थित एक दूरस्त गांव शुक्री के रहने वाले डॉ. महेश कुड़ियाल बीते तीन दशक से उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून में बतौर न्यूरो सर्जन सेवा कर रहे हैं। डा. कुड़ियाल ने 1995 में केजीएमसी लखनऊ से एमबीबीएस और 1989 में एमएस किया। उन्होंने अपना एम सीएच (न्यूरोसर्जरी) संजय गाँधी मेडिकल कालेज लखनऊ से पूरा किया, जिसके बाद वे उत्तराखण्ड के पहले न्यूरोसर्जन के रूप से सेवा देने लगे। डा. कुड़ियाल ने न्यूरो सर्जन बनने का रास्ता जानबूझकर का चुना। 90 के दशक में उन्होंने यह महसूस किया कि न्यूरोसर्जन की कमी के कारण पहाड़ के लोग देश के बड़े-बड़े अस्पतालों का रुख करते हैं लेकिन उन्हें उचित उपचार नहीं मिल पाता, अपनी डिग्री हासिल करने के बाद, उन्होंने पूरे दिल से अपने समाज और प्रदेश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

डा. कुड़ियाल को उनकी कार्यकुशलता को देखते हुए देश के बड़े-बड़े महानगरों के साथ ही विदेश में काम करने का अवसर मिला था, लेकिन उन्होंने अपनी इस दुर्लभ चिकित्सा विशेषता में अपनी सेवाएं देने के लिए उत्तराखण्ड का विकल्प चुना। महेश कुड़ियाल 1996 में जब विशेष प्रशिक्षण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में क्लीवलैंड क्लीनिक गए तो उन्हें नौकरी की पेशकश की गई लेकिन मना कर दिया और भारत वापस लौट आए क्योंकि वे उत्तराखण्ड के दूरदराज के इलाकों में न्यूरोलॉजिकल सेवाएं देना चाहते थे। वर्ष 1994 में, डा. महेश कुड़ियाल ने मेरठ से शिमला तक लगभग 60 लाख की आबादी के लिए उत्तराखण्ड में पहली न्यूरो साइंस सेवाएं शुरू की। चूंकि न्यूरोलाजिकल सुविधाएं केवल दिल्ली और चण्डीगढ़ में उपलब्ध थी, इसलिए सभी बीमार और गम्भीर रोगियों को इन शहरों में रुेर करना पड़ता था और उनमें से आधे मरीजों की मौत रास्ते में ही हो जाती थी डा. कुड़ियाल द्वारा देहरादून में इन चिकित्सा सुविधाओं की स्थापना के बाद उत्तराखण्ड, हिमाचल और उत्तर प्रदेश से मरीजों का आना शुरू हो गया। आज से तीन दशक पहले डा. महेश कुड़ियाल ने बिना किसी सहायता के समाज के सबसे गरीब तबकों को ये सेवाएं प्रदान करना जारी रखा। इनमें से अधिकांश रोगियों का इलाज नाममात्र के खर्च या मुफ्त में किया गया। उन्होंने देहरादून में एक व्यापक ट्रामा सेन्टर की स्थापना की। उन्होंने 1994 के उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन के पीड़ितों को मुफ्त उपचार भी उपलब्ध कराया। वह पिछले 3 दशक में उत्तराखण्ड में आई सभी आपदाओं के पीड़ितों के राहत और बचाव कार्य में भी सक्रियता से शामिल रहे हैं। एक चिकित्सक के रूप में उनकी लोकप्रियता ने उन्हें विभिन्न संगठनों के साथ जोड़ दिया है। वह ओएनजीसी, सैन्य अस्पताल और कई सरकारी संगठनों के पैनल में विजिटिंग डाक्टर रहे हैं, वह समय-समय पर सेना को नि:शुल्क सेवाएं देते रहे हैं।

पहाड़ की सेवा के लिए समर्पित डा. कुड़ियाल को उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (से.नि.) गुरमीत सिंह व मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा उत्तराखण्ड गौरव सम्मान 2024 से सम्मानित किया। प्रख्यात न्यूरोसर्जन डाक्टर महेश कुडियाल उत्तराखण्ड ही नहीं पश्चिम उत्तर प्रदेश के पहले न्यूरोसर्जन हैं। 1990 के दशक से वे चिकित्सा पेशे से जुड़े रहकर रोगी और रोगों पर अनुसंधान रत हैं। अपने पहाड़ी इलाके और कठिन भौगोलिक दृष्टिकोण वाला उत्तराखण्ड स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के लिए हमेशा एक चुनौती रहा है।

उत्तरकाशी के सुदूर गांव के बेटे के रूप में डा. कुरियाल ने खराब स्वास्थ्य ढांचे और योग्य डाक्टरों की कमी के कारण लोगों के दर्द को महसूस किया। उन्होंने 1985 में केजीएमसी लखनऊ से एमबीबीएस और 1989 में एमएस किया। उन्होंने एम.सी.एच. किया। (न्यूरोसर्जरी) एसजीपीजीआईएमएस लखनऊ से। उन्हें उत्तराखण्ड के पहले न्यूरोसर्जन होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने जानबूझकर यह अनुशासन अपनाया क्योंकि उन्होंने न्यूरोसर्जन की कमी के कारण अपने समुदाय की पीड़ा देखी थी, जिन्हें इस सेवा को प्राप्त करने के लिए देश भर में यात्रा करनी पड़ती थी। अपनी डिग्रियाँ हासिल करने के बाद, वह पूरे दिल से अपने समुदाय की सेवा में समर्पित हो गये। हालाँकि उनके पास किसी महानगर में काम करने या विदेश प्रवास करने का अवसर था लेकिन उन्होंने इस अनूठी और कठिन चिकित्सा विशेषज्ञता में अपनी सेवाएँ प्रदान करने के लिए उत्तराखण्ड को चुना, जिसके लिए बहुत कड़ी मेहनत की आवश्यकता थी। 1996 में वह न्यूरोसर्जरी में आब्जर्वर के रूप में अमेरिका के क्लीवलैंड क्लीनिक गए और उन्हें नौकरी की पेशकश की गई लेकिन उन्होंने मना कर दिया और भारत वापस लौट आए क्योंकि वह उत्तराखण्ड के दूरदराज के इलाकों में न्यूरोलाजिकल सेवाएं प्रदान करना चाहते थे। उनका मानना है कि मरीज के साथ अनावश्यक चीर-फाड़ न करके न्यूनतम व्यय पर रोग की खोज की जानी चाहिए, ऐसा होने पर शीघ्र वस्तु स्थित सामने आ जाती है।जिस से डाक्टर को मरीज का इलाज करने में सुविधा हो जाती है।

जोहार महोत्सव : तरंगित.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कलाकारों ने अपना प्रदर्शन किया। महोत्सव का शुभारम्भ निवर्तमान मेयर डॉ. जोगेन्द्र पाल सिंह रौतेला ने किया। शौका समुदाय की महिलाओं ने सरस्वती वन्दना और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

इसके अगले दिन व्यंजन प्रतियोगिता में किरन धर्मशक्तू प्रथम, वैजयन्ती मर्तोलिया द्वितीय और अनीता पांगती तृतीय रहे। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में बसन्ती टोलिया प्रथम, हीरा जंगपांगी द्वितीय और हंसा पांगती तृतीय स्थान पर रहे। आयोजन को लेकर उत्साहित महिलाओं ने परम्परागत ढुस्का प्रदर्शन किया इसके लिये वह कई दिनों से अभ्यास भी कर रहे थे। यह तरंगित करने वाला समय भी है ताकि भावी पीढ़ी अपने बुजुर्गों से अपनी विधाओं को सीख सकें। घाटी से शहर में बस चुके बुजुर्गों की तमन्ना है कि नई पीढ़ी विरासत की संभाल करे।

आयोजन के समापन दिवस पर देर रात्रि तक सांस्कृतिक मंच सजा रहा। सीमान्त की संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों के अलावा कुमाउंनी, गढ़वाली, नेपाल धुनों पर अपनी प्रस्तुति देते कलाकारों ने समा बांधा। इस दिन धारचूला विधायक हरीश धामी ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के एलकेजी ग्रुप में भाविका, लक्षित, दिशानी, कक्षा 2 से 5 तक के ग्रुप में अनिका, जाहनवी, इशिता, वैभव पांगती, कक्षा आठवीं तक के ग्रुप में दीक्षान्त, नविका, राशि और राघवेन्द्र प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। फैंसी ड्रेस में अहाना मर्तोलिया प्रथम, मयरा मर्तोलिया द्वितीय रहे।

महोत्सव में जोहार सांस्कृतिक संगठन के संरक्षक गजेन्द्र सिंह पांगती, प्रहलात सिंह मर्तोलिया, अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह पांगती, जोहार मिलन केन्द्र के अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू, सोसाइटी के महासचिव धीरेन्द्र सिंह पांगती, कोषाध्यक्ष धाम सिंह मर्तोलिया, सांस्कृतिक सचिव नवीन टोलिया, महिला शौका समिति की अध्यक्ष पुष्पा धर्मशक्तू, जोहार मिलन केन्द्र के महासचिव गंगा सिंह धर्मशक्तू, पुरमल सिंह मर्तोलिया, ध्रुव सिंह मर्तोलिया, खरक सिंह रावत, कैलाश सिंह धर्मशक्तू, केदार वृजवाल, प्रेम सिंह जंगपांगी, मनोहर सिंह मर्तोलिया आदि थे।

ज्योतिष की बातें- 204

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह शनि मूलत्रिकोण राशि कुम्भ में, सूर्य मित्रराशि वृश्चिक में, बुध व शुक्र समराशि वृश्चिक व धनु में, गुरु शत्रुराशि वृषभ में, मंगल नीचराशि कर्क में तथा चन्द्रमा इस सप्ताह मिथुन, कर्क व सिंह राशि में क्रमशः गोचर करेगा।

जिन जातकों को केवल अपनी राशि की जानकारी है उन्हें इस स्तम्भ के माध्यम से किसी भी ग्रह के गोचरुल का एक संकेत अवश्य प्राप्त हो जाता है।

श्री कालभैरवाष्टमी- मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष की अष्टमी मध्याह्न से प्रदोष तक रहने वाली तिथि में अथवा प्रदोष व्यापिनी अष्टमी तिथि में भैरव जयन्ती का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार शनिवार 23 नवम्बर 2024 को भैरव जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा। जिनकी जन्म कुण्डली में केतु अशुभ है अथवा केतु की महादशा अन्तर्दशा चल रही है उन्हें यह पर्व अवश्य ही मनाना चाहिए और श्री कालभैरवाष्टकम् का श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन पाठ करना चाहिए ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 95

जनसंख्या नियंत्रण अप्राकृति

अभी दक्षिण के दो राज्यों ने अधिक सन्तान उत्पन्न करने के लिए प्रोत्साहन देने की योजना बनाई है। चीन में भी एक बच्चा नीति तो बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी है, अब तीन सन्तान उत्पन्न करने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है। दुनिया के बहुत से देशों में जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक है। वहाँ पर अधिक सन्तानें उत्पन्न हों इसके लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं बनाई जाती हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि पुरुष के पुरुषार्थ से ही आबादी बढ़ती है यह उनका वास्तव में घमण्ड है। यदि पुरुषार्थ से ही आबादी बढ़ती तो बहुत से ठण्डे देशों में आबादी क्यों नहह्ल बढ़ रही है? वहाँ पर भी मनुष्य लाखों वर्षों से रह रहा है। भारत के भी हिमालयीन राज्यों में और कुछ पठारी स्थानों पर जनसंख्या अत्यधिक विरल क्यों है? वहाँ पर भी तो पुरुषार्थ करने वाले लोग लाखों वर्षों से रह रहे हैं।

वास्तव में मनुष्य के पुरुषार्थ से ही आबादी नहह्ल बढ़ती बल्कि आबादी का सीधा सम्बन्ध उस स्थान की जलवायु से ही होता है। जिन स्थानों पर जलवायु अनुकूल होती है वहाँ पर जनसंख्या घनत्व अत्यधिक होता है और जहाँ पर जलवायु प्रतिकूल होती है वहाँ जनसंख्या अति विरल होती है । साथ ही यह भी सत्य है कि और मनुष्यों की आबादी का स्थानान्तरण सघन से विरल की ओर निरन्तर स्वाभाविक रूप से होता रहता है। अतः मनुष्यों की जनसंख्या नियन्त्रित करने का प्रयास निरर्थक ही होता है, चाहे वह राष्ट्रीय स्तर पर हो, सामाजिक स्तर पर हो अथवा व्यक्तिगत स्तर पर। ऐसा करने से समाज में, परिवार में अव्यवस्था और असन्तुलन ही पैदा होता है । किसी भी जीव की आबादी का नियन्त्रण प्रकृति स्वयं ही करती है ।

-सरल

हल्द्वानी रेलवे भूमि पर सर्वे में पाया गया अतिक्रमण

हल्द्वानी। रेलवे की भूमि पर अतिक्रमण चिन्हिकरण कर रेलवे और प्रशासन इसकी फाइनल रिपोर्ट में जुटा हुआ है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर हुए सर्वे की रिपोर्ट शासन के माध्यम से कोर्ट में प्रस्तुत की जानी है। बताते चलें कि हल्द्वानी रेलवे भूमि पर अतिक्रमण का प्रकरण सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है। कोर्ट ने रेलवे से पूछा था कि उसे विस्तारीकरण में कितनी जमीन चाहिये और उस पर कितने लोगों ने अतिक्रमण कर रखा है। साथ ही राज्य सरकार और रेलवे से इन्हें बसाने के लिए विस्तृत योजना बनाकर देने के लिये कहा गया है। इसी क्रम में जिला प्रशासन और रेलवे ने मिलकर सर्वे किया। रेलवे अपने विस्तारीकरण के लिए करीब बीस हेक्टेयर जमीन की जरूरत बता रहा है। एक महीने तक चले सर्वे में आावश्यकता वाली जमीन पर चार हजार अतिक्रमण चिहिन्हत हुए हैं।

उल्लेखनीय है कि बनभूलपुरा से लगी रेलवे की भूमि पर जब से लोगों को हटाने का अभियान तय हुआ है हड़कम्प है। रेलवे से लगी भूमि पर बैठे परिवारों को हमेशा संरक्षण देने वाले नेता अब मौन हो चुके हैं।

सशक्त भू-कानून और मूल निवास के लिये जनसैलाब उमड़ा

हरिद्वार। उत्तराखण्ड स्थापना का रजत जयन्ती वर्ष शुरू होते ही फिर से आन्दोलन छिड़ चुके हैं। सशक्त भू-कानून और मूल निवास की मांग को लेकर सड़कों पर जनसैलाब का उमड़ना संकेत कर रहा है कि पहाड़ की जनता फिर से गुस्से में है। मूल निवास और भू कानून समन्वय संघर्ष समिति के बैनर तले आयोजित स्वाभिमान महारैली जो ऋषिकुल मैदान से शुरू हुई, इसमें प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये हजारों लोगों ने प्रतिभाग किया। महारैली को सामाजिक और किसान संगठनों का भी समर्थन मिल रहा है। प्रदर्शनकारियों ने रोजगार की मांग के अलावा माफियाराज के विरोध में जबर्दस्त नारेबाजी की। आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए संयोजक मोहित डिमरी ने कहा कि ये लड़ाई प्रदेश के मूल निवासियों के अस्तित्व को बचाने के लिये है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बेरीनाग : मस्जिद को लेकर धुंआ पहले से था

प्रदर्शनकारियों को पुलिस ने समझाया

बेरीनाग। नगर में कथित तौर पर अवैध रूप से बनाई गई मस्जिद को हटाने की मांग को लकर राष्ट्रीय सो संघ के कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों ने राज्य स्थापना दिवस पर प्रदर्शन करते हुए धरना दिया। जिन्हें पुलिस ने आश्वासन देकर उठाया। एसडीएम श्रेष्ठ गुनसोला का कहना है कि बेरीनाग में भूमि का मामला न्यायालय में चल रहा है। ऐसे में मस्जिद को सीज किया जाना सम्भव नहीं है। मामले में नोटिस जारी किया जाएगा और आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। विवाद और अराजकता का माहौल पैदा न हो इसके लिये पुलिस तैयार है।

बताया जा रहा है कि सुरम्य नगरी बेरीनाग में मस्जिद को लेकर दो दशक पहले ही हवा बन चुकी थी। नौकरी के लिये बेरीनाग आने वाले भी इसमें सक्रिय रहे हैं। अपनी मीठी बातों में क्षेत्रवासियों को उलझाने वाले पहाड़ का बनकर अपनी संस्कृति के लिये जुटे थे। असल में हो क्या रहा था इस ओर किसी ने ध्यान भी नहीं दिया उल्टा सहयोग करते रहे। क्षेत्रवासियों ने यह मान लिया कि बाहर से नौकरी के लिये आये हुए शिक्षित लोग हर चीज बेहतर ही कर रहे हैं। जबकि नगर क्षेत्र में आसपास गांवों के अलावा बाहर से आने वाले बड़ी संख्या में हैं। इनमें दुकानदार, ठेकेदार, कबाड़ बेचने वाले, नाई, धोबी, कसाई, सब्जी वाले, मैकेनिक सभी हैं। सौहार्दपूर्ण वातावरण में किसी प्रकार की अशान्ति न हो इसके लिये बुद्धिजीवी वर्ग हमेशा से सचेत रहा है लेकिन वर्तमान आपधापी में माहौल बिगाड़ने वाले भी तेज तर्रार हो चुके हैं।

यही सब देखते हुए प्रशासन और पुलिस ने सूझबूझ से काम लेते हुए क्षेत्र वासियों को भरोसा दिलाया है कि वह न्यायपूर्ण करेंगे। बेरीनाग की जमीन का मसला न्यायालय में है, ऐसे में कोई भी ऐसा कार्य न हो जिसे भुगतना पड़े।

राष्ट्रीय सेवा संघ का आरोप है कि नगर में कथित तौर पर मस्जिद बनाई गई है। संघ के अध्यक्ष हिमांशु जोशी ने जैसे ही राज्य स्थापना दिवस पर मस्जिद के विरोध का ऐलान किया पुलिस ने नगर में धारा 163 लगा दी। अगले दिन संघ कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों ने मस्जिद हटाने की मांग पर गणेश चौक पर प्रदर्शन किया और तहसील तक रैली निकाली। कहा कि बेरीनाग में अवैध मस्जिद का संचालन नहीं होने दिया जायेगा।

इस पूरे मामले में यह समझ आने लगा है कि पहाड़ में बाहर से आकर कब्जा करने का काम होता रहा है। साथ ही बेरीनाग जैसे शहर को तरीके से बसाने की प्रक्रिया जारी है और इसमें चाय बागान की भूमि सहित अन्य प्रकरण सुलझेंगे। यदि किसी प्रकार का अवैध कब्जा वाली स्थिति है तो न्यायालय से उसका समाधान होगा। नगर व आसपास बाहर से आने वालों का सत्यापन जरूरी है ताकि सुरक्षा की दृष्टि से कोई भी गड़बड़ी न हो सके।

परिक्रमा

आन्दोलनकारियों का प्रदर्शन

नारायणबगड़। चिन्हीकरण से बंचित राज्य आन्दोलनकारियों ने राज्य स्थापना दिवस को काला दिवस के रूप में मनाया और तहसील मुख्यालय में प्रदर्शन किया। परखाल तिराहे पर नारेबाजी करते हुए तहसील कार्यालय तक जुलूस निकाला।

वंचितों को मिले आन्दोलनकारी दर्जा

चम्पावत। उत्तराखण्ड राज्य निर्माण आन्दोलन में बढ़ चढ़कर भागीदारी करने वाले लोगों और पत्रकारों को आन्दोलन कारी घोषित करने की मांग को लेकर डीएम के माध्यम से सीएम को ज्ञापन भेजा गया। संगठन के अध्यक्ष दिनेश चन्द्र पाण्डे की अगुवाई में डीएम नवनीत पाण्डेय से मिलने गये शिष्टमण्डल ने कहा कि राज्य आन्दोलन में अग्रणीय लोगों को आज तक भी चिन्हीकरण नहीं किया गया है। ऐसे सभी लोगों को सम्मान मिलना चाहिये।

सचिव मीनाक्षी सुंदरम और बॉबी पंवार में तनातनी क्यों?

पहाड़ की लड़ाई पर सवाल और मलाल

पूर्व आईएएस एसएस पांगती की बातों ने झकझोरा है

देहरादून। उत्तराखण्ड ऊर्जा सचिव मीनाक्षी सुन्दरम् और युवा नेता बॉबी पंवार के बीच चल रही तनातनी पर पूरा पहाड़ सवाल करने लगा है। आखिर पहाड़ की लड़ाई पर सवाल और मलाल क्या सोचा जाए? पूर्व आईएएस सुरेन्द्र सिंह पांगती की बातों ने पूरे प्रकरण पर अपनी बात रखते हुए झकझोरा भी है।

दरअसल चुनाव लड़कर अपनी ताकत दिखा चुके पहाड़ के युवा जुझारु नेता पंवार एक मसले पर ऊर्जा सचिव से बात करने गये थे। उनपर आरोप है कि उन्होंने सचिव के साथ गाली-गलौच करते हुए धमकी दी। आईएएस एसोसिएशन ने सीएम से कार्रवाई का आग्रह किया। इस पर बॉबी पंवार के पक्ष में बड़ी संख्या में युवा सड़कों पर उतर आया और कहा कि उत्तराखण्ड को खिलौना समझने वाले अधिकारी मनमानी पर उतर आये हैं। पंवार की ताकत देखते हुए राजनीतिक गलियारों में भी फिजा बनने लगी। उपचुनाव देखते हुए सरकार भी सीधे हाथ डालने में बचाव कर चुकी है।

बेरोजगार संघ के अध्यक्ष बॉबी पंवार अपने साथियों के साथ मिलकर क्या अभद्रता की, यह सब तो जांच में पता चल जायेगा लेकिन सीधा सवाल यह है कि इस प्रदेश में ऐसा क्या होने लगा है कि युवा सीधे अधिकारियों से जाकर भिड़ जाए। पूर्व आइएएस एसएस पांगती ने भी आश्चर्य किया है कि सचिवालय में घुसकर कोई युवा कैसे भिड़ सकता है।

चौकोड़ी महोत्सव की तैयारी

बेरीनाग। दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में होने वाले चौकोड़ी महोत्सव को लकर तैयारी शुरू हो चुकी है। रंगकर्मी हरीश चुफाल इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं। रत्नाकर पाण्डे जैसे चिन्तनशील युवा भी इस क्षेत्र में सक्रिय हैं।

नाग महोत्सव में पर्वतीय संस्कृति

बेरीनाग। नाग संस्कृति संवर्धन एवं महोत्सव आयोजन समिति द्वारा इस बार भी चार दिवसीय श्री नाग महोत्सव का आयोजन किया गया। राजकीय इण्टर कालेज के क्रीड़ा मैदान में आयोजन की शुरुआत सांस्कृतिक शोभायात्रा से हुई। स्थानीय कलाकारों ने क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं का मंच में प्रस्तुतिकरण किया जिन्हें आयोजकों द्वारा प्रोत्साहित किया गया। आयोजन के दौरान आगामी निकाय चुनाव देखते हुए नेतागण अति सक्रिय दिखाई दिये।

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

खुशाल सिंह पीपलिया

लिंकरोड, टकाना, पिथौरागढ़

मनोज पीपलिया

एक क्लास कांट्रेक्टर नाचनी, तल्ला जोहार

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भेंटवार्ता

शौकी शब्दकोश संकलनकर्ता गजेन्द्र पांगती से हरीश धर्मशक्तू बातचीज

हरीश- शब्दकोश निर्माण का विचार कैसे आया?

गजेन्द्र- करोना काल की बंदिशें जब खिंचती गयी तो हम लोगों ने विलुप्त हो रही शौका भाषा के संरक्षण के लिये इस आपदा को एक अवसर में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। पहले युवा सुमित को ग्रुप में जोड़कर एक whatsapp ग्रुप बनाया गया जिसमें करीब 50 लोग जुड़ गये। लछबू जैसे जतनकतरों और धनेश व महेश ज्योति जैसे युवाओं के इसमें जुड़ने से सार्थक परिचर्चा को गति मिली। कुछ समय बाद मैंने सुझाव दिया कि हर रविवार 4 से 6 बजे तक ग्रुप की ऑनलतइन गोष्ठी की जाय क्योंकि लेखन से सम्वाद अधधिक प्रभावी होता है। सामुहिक मिलन खुलने तक यह प्रक्रिया नियमित रूप से चलीत रही। सम्वाद में तर्क वितर्क और कभी कुतर्क भी होते रहे। इसी में सहमति बनी कि यदि हमें अपनी बोली को बचाना है, उसको एक सशक्त भाषा बनाना है और आज की पीढ़ी को अपनी बोली-भाषा को सिखाना है तो मात्र घर और समाज में उन्हें बोलना पर्याप्त नहीं होगा। उसके लिये हैं साधन (tools) विकसित करने होंगे, जैसे औखान का संग्रह, व्याकरण की रचना और शब्दकोश का संकलन। स्पष्ट है कि शब्दकोश संकलन के दो मुख्य कारण थे। पहला- राजनीनक कारणों से विस्थापित हुए समाज ने जब अपने को आर्थिक दृष्टि से सम्भाला और मेरे जैसे नौकरी पेशा वाले लोग सेवानिवृत्त पर घर आये तो उन्होंने पाया कि जीवन यापन के जद्दोजहद में वे न केवल अपनी मातृभूमि बल्कि अपनी संस्कृति और भाषा भी पीछे छोड़ आये हैं। यहाँ तक कि आज के युवा ही नहीं बल्कि 1950 के बाद जन्मे बुजुर्ग भी अपनी बोली भूल चुके हैं। यही हाल संस्कृति का भी था। इन दोनों का संरक्षण और सम्वर्धन करने का दायित्व मेरी पीढ़ी के लोगों का था जिन्होंने बचपन में शौका जीवन जिया था। इसलिये समृद्ध शौकी बोली के शब्द सम्पदा को शब्दकोश के माध्यम से संरक्षित करना आवश्यक था। दूसरा कारण था शौकी का एक बोली तक सीमित होना। बोली भाषा बनाने के लिए एक प्रमाणित शब्दकोश का होना आवश्यक था। करुणा की बंदिशों में ढील दिये जाने के बाद जुलाई 2021में हल्द्वानी में एक offline गोष्ठी की गयी जिसमें औखानो कत संग्रह करने का दायित्व हरीश धर्मशक्तू ने लिया। व्याकरण लिखने का दायित्व जगदीश बजृवाल को दिया गया और शब्दकोश संकलन का श्रमसाध्य दायित्व मैंने अपने ऊपर लिया। खुशी की बात है कि तीनों ने अपना-अपना दायित्व बखूबी निभाया।

हरीश- शब्दकोश तैयार करने में आपको कितना समय लगा और किन किन चुनौनयों का समना करना पडा?

गजेन्द्र- इसकत संकलन मैंने जुलाई 2021 में प्रारम्भ किया था। इसके लिये मैंने तीन वर्षों तक नित्य 6 घण्टे काम किया। सबसे बड़ी चुनौती थी शब्द संकलन। में बचपन में इसे बखूबी जानता और बोलता था लेकिन 50 वर्षों से न बोलने के कारण शब्द सुशुप्तावस्था में चले गये थे। डॉ.शेर सिंह पांगती की रचनतओं के अतिरिक्त आधार सामग्री नगन्य थी। अंग्रेजी और हिन्दी के कई शब्दकोशों के परीक्षण के बतद मैंने पाया कि आधार के लिये कामिल बुल्के का अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश सबसे उपयुक्त होगा। अंग्रेजी और हिन्दी के कई शब्दों के लिये शौकी में कोई शब्द न होना और उसी तरह कई शौकी शब्दों के लिये अंग्रेजी और हिन्दी में कोई शब्द न होना और उनका अर्थ लिखना भी एक समस्या थी। नीता पांगती ने तीन माह तक editing और नवीन पांगती ने sofaware के माध्यम से शब्दों के club-bing, sorting तथा deletion किया अन्यथा मुझे इस कार्य में एक वर्ष और लगता।

हरीश- शब्दकोश में 35000 से अधिक शब्दों को संकलित करने की प्रकिया क्या थी?

गजेन्द्र- सबसे पहले मैंने कामिल बुल्के के अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश के शब्दों को लिपिबद्ध किया। फिर उनमें छूटे शब्दों को जोड़ा और आज के सन्दर्भ में प्रचलन से बाहर हो चुके शब्दों को हटाया। तदुपरान्त उनका शौका शब्द लिखा। फिर उसमें उन विशिष्ट शौकी शब्दों को जोड़ा जिनके लिये अंग्रेजी और हिन्दी में या तो कोई शब्द नहीं थे या फिर उपयुक्त शब्द नहीं थे। यही सबसे विकट काम था। इसके लिये मुझे कई बार रात-रात भर जागना पड़ा और हफ्तों तक अपनी याददास्त पर जोर डालना पड़ा तथा शौकी बोली जानने वाले लोगों को समय-असमय पर फोन करना पड़ा।

हरीश- क्या इस शब्दकोश में सभी तरह के शौकी शब्द शामिल किये गये हैं?

गजेन्द्र- प्रयाश किया गया है कि इसमें सभी तरह के प्रचलित शब्द आ जायें चाहे वे किसी भी भाषा से आए हों। हमारे पूर्वजों ने उनमें से कुछों को यथारूप अपनता था और कुछों को शौकीकरण करके अपनाया था लेकिन बहुत से शब्द ऐसे थे जो पूर्वकालीन कार्य-व्यवहार में आवश्यक न होने से प्रयोग में नहीं आये थे। आज के सन्दर्भ में और बोली के भाषाईकरण की अपरिहार्यता के कतरण ऐसे शब्दों को (न) जोड़कर अपनाया गया है। कुछों का शौकीकरण कर दिया गया है और कुछों का शौकीकरण भविष्य के प्रयोग पर छोड़ दिया गया है।

हरीश- शब्दकोश में शौकी शब्दों का हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद किस प्रकार किया गया है?

गजेन्द्र- जिन शब्दों के लिये शौकी में सही शब्द उपलब्ध है उन्हें यथारूप लिया गया है। जहाँ वह उपलब्ध नहीं हैं वहाँ संक्षेप में उसका अर्थ लिखा गया है।

हरीश- शौकी बोली में कई ऐसे शब्द हैं जिनको बोलना तो आसान है पर लिखना कठिन है। इस समस्या के समाधान के लिये क्या कोई ध्वनि (audio) या phonetic सहायता जोडी गई है?

गजेन्द्र- हाँ, इसमें हर शब्द के प्रतरम्भ में उसका audio जोड़ने की सुविधा है। अभी बीस ऐसे शब्दों का audio अपलोड किया गया है जिनको बोलना तो आसान है पर लिखना कठिन। मैंने, परिपाटी के अनुरूप, अभी उनके लिये स का प्रयोग

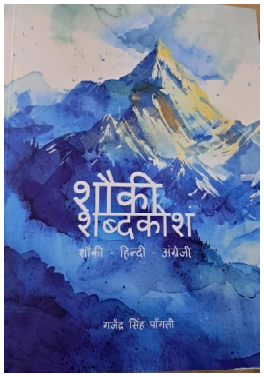

किया है। डा. शेर सिंह पांगती ने उनके लिये अ: और चन्द्र सिंह दास्पा ने अ के साथ ह जोडा है। लेकिन ऑनलाइन परिचर्चा में इनको नहीं स्वीकारा गया और भविष्य पर छोड़ दिया गया। मुझे आशा है कि इस तरह का उच्चारण अंग्रेजी की तरह प्रयोग व परपाटी से कालान्तर में विकसित और मान्य हो जायेगी। शौका से इतर जनता की सुविधा के लिये भविष्य में कुछ अन्य शब्दों का भी audio जोड़ा जा सकता है।

हरीश- क्या किसी शौकी शब्द को बेहतर ढंग से समझने के लिये चित्रों (images) कत भी उपयोग किया गया है?

गजेन्द्र- हाँ। इसमें लाईन के अन्त में image देने की सुविधा भी है। अभी कुछ image अपलोड कर दिये गये हैं। धीरे-धीरे सभी विशिष्ट वस्तुओं, प्राणियों और वनस्पनयों का image अपलोड करने की योजनत है।

हरीश- इस शब्दकोश का उपयोग करके नई पीढ़ी को अपनी मातृभाषा से जोड़ने के लिये क्या प्रयाश किये जा सकते हैं?

गजेन्द्र- किसी भी चीज को सीखना और प्रयोग करना मुख्य रूप से स्वप्रेरित होता है। हम यानी समाज, उसके लिये केवल माहौल बना सकते हैं और tools विकसित कर सकते हैं जो किया जा रहा है। अभी हमने ग्रुप में अपनी भाषा में लिखना और सार्वजनिक सम्भाषणों में अपनी भाषा का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया है। इसे और व्यापक, स्वाभाविक और स्वत:स्फूर्त बिना होगा। उच्चारण की कर्णकटुता को बना भाषा की मूल प्रवृत्ति को बाधित किये कम करना होगा और उनको सरल व सहज बनाना होगा।

हरीश- क्या इस शब्दकोश को भविष्य में और विस्तार देने की आवश्यकता है?

गजेन्द्र- हाँ। शब्दकोश एक living document है। यह कभी भी पूर्ण नहीं होता है। समय के साथ शब्दों का अर्थ या भावार्थ बदलना एक स्वाभाविक प्रकिया है। इसमें अन्य भाषाओं से और विज्ञान से नये शब्द जोड़ना इसको उपयोगी बनाने के लिये नितान्त जरूरी है। इसीलिये मैंने हिन्दी और अंग्रेजी के बहुत से शब्द (न) संकेतकों के साथ जोड़ा है।

हरीश- क्या यह शब्दकोश केवल ऑनलतइन उपलब्ध है या इसका प्रिंट संस्करण भी जारी होगा?

गजेन्द्र- इसका संक्षिप्त 19000 शब्दों का संस्करण प्रकाशित हो चुका है और notionpress.com तथा amazon में उपलब्ध है। कुछ प्रतियां मेरे पास भी उपलब्ध हैं।

हरीश- शब्दकोश का इस्तेमाल करने के लिये क्या किसी विशेष प्रशिक्षण या दिशा-निर्देश की आवश्यकता होगी?

गजेन्द्र- आज के तकनीकी ज्ञान रखने वाले युवाओं को इसका इस्तेमाल करने में कोई असुविधा अपेक्षित नहीं है। लेकिन मेरे आयुवर्ग के लोगों को प्रशिक्षित करना होगा जो, आशा है, उनके नाती, पोते कर देंगे। लेकिन पेज के अन्त में दिये गये filter और filtered image से gallery में जाने तथा शब्दकोश में दिये गये 60 group names के प्रयोग से शब्दकोश के प्रयोग को सहज और रोचक बनाने के लिये पाठकों को प्रेरित और guide करना होगा।

हरीश- शब्दकोश के रखरखाव और अपडेट का जिम्मा किसके पास होगा?

गजेन्द्र- इसके दो प्रबन्धक हैं, नवीन पांगती और नीता पांगती। उनके पास इसके संचतलन का सपम्पूर्ण अधिकार है। इसके अतिरिक्त इसके दो con-tributors हैं, गजेन्द्र पांगती और हरीश धर्मशक्तू। इनके पास editing और adding का अधिकार है।

हरीश- भविष्य में इस परियोजना को और भी आगे कैसे ले जाने की आवश्यकता है?

गजेन्द्र- इसको परिमार्जित करने और समृद्ध बनाने की प्रकिया निरन्तर बनाये रखना होगा। किसी भी समय इसमें कम से कम दो प्रबन्धक और दो con-tributors रखना होगा ताकि यह प्रक्रिया बाधित न हो। इसीलिये 6 अक्टुबर को इसके website के लोकार्पण के समय मैंने इसे शौका समाज को समर्पित किया था।

हरीश- शब्दकोश के निर्माण के दौरान किस प्रकार का सामूहिक सहयोग प्राप्त हुआ?

गजेन्द्र- इस दौरतन मुझे हर किसी से प्रोत्साहन मिला। डा.शेर सिंह पांगती की रचनतओं और बसन्ती टोलिया, हरीश धर्मशक्तू, लक्ष्मण सिंह पांगती लछबू और अनीता पांगती से मुझे शब्द चयन और चयनित शब्दों के अर्थ की पुष्टि में और डा. लक्ष्मी रावत से botanical शब्दों को जोडने में काफी सहयोग मिला जिसके लिये मैं उन सभी का आभारी हूँ। शब्दकोष को online करने का सारा श्रेय श्री नवीन पांगती को जाता है।

हरीश- शौकी भाषा के अन्य पहलुओं जैसे व्याकरण या वाक्य संरचना पर भी ध्यान दिया गया है?

गजेन्द्र- इसमें व्याकरण और वाक्य प्रयोग की भी सुविधा है। मैंने इसमें अभी केवल sinular/plueal, tenses तथा rela-tional worl संरचना दी है। आवश्यक होने पर भविष्य में इसे विस्तार दिया जायेगा और कुछ विशिष्ट शब्दों का वाक्य प्रयोग भी दिया जायेगा।

हरीश- इस शब्दकोश से शौकी समुदाय के लोगों को क्या लाभ होगा, खासकर उन लोगों को जो अपनी भाषा से दूर हो चुके हैं?

गजेन्द्र- इससे उन्हें अपनी बोली बोलने, उसे साहित्य रचना करने और शोध ग्रन्थ आदि लिखने में मदद मिलेगी।

हरीश- क्या शब्दकोश का उपयोग भाषा संरक्षण के अन्य प्रयासों जैसे साहित्यिक रचनाओं या गीतों के संरक्षण में भी किया जत सकता है?

गजेन्द्र- हाँ। निश्चित रूप से, यदि चाह हो और अपनी संस्कृति को बचाने की लालसा हो तो।

हरीश- यदि आप अपने समाज के लोगों को कुछ कहना चाहते हैं तो कृपया कहने का कष्ट करें?

गजेन्द्र- मैं सिर्फ यह कहना चाहूंगा कि 'निज भाषा उन्नत अहे सब उन्नति को मूल'। यदि हमें अपनी संस्कृति बचानी है तो अपनी भाषा पहले बचानी होगी क्योंकि बिना भाषा के कोई संस्कृति नहीं होती। भाषा तभी बचेगी जब उसको बोला जायेगा और उसकी विशिष्टता को बनाये रखा जायेगा और शौकी का कुमाउंनीकरण या हिन्दीकरण करने की जगह उनसे जो नये शब्द लिये जाएं उनका शौकीकरण किया जायेगा जैसे हमारे पूर्वजों ने किया था। इसमें सर्वसमाज की भागीदारी आवश्यक है। केवल उपदेश देने से कार्य नहीं चलेगा। आइये, इसे mission भाव से भागीदारी करें।

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
प्रताप केयर क्लीनिक मदकोट
डॉ.गोकर्ण सिंह जंगपांगी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

सम्पर्क
7351285555

नरेन्द्र सिंह रावत

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

मो.- 9458920379, 6396098804

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)

गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी

मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

MARTOLIA FURNITURE

A unit of Martolia Enterprises

Pilikothi, Haldwani

Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

इन्द्रा पांगती

सी 85, सेक्टर-एन
अलीगंज कुर्सी रोड
(निकट शक्ति हास्पिटल)
लखनऊ

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)